The Pioneer 09-08-2018

NSI holds training programme on ETP operation & lab analysis

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

The Director of National Sugar Institute, Prof *Narendra Mohan* while addressing a three-day training programme on 'ETP Operation and Laboratory Analysis' on Wednesday said the sugar industry was coming under prime agro-business and to process one tonne of sugarcane large quantity of fresh water was required and large amount of wastewater was also released. He said the effluent generated from sugar processing industry had miscellaneous quality like contains high BOD, COD, grease, dissolved solid etc. He said to comply with the environmental norms for the release of effluent, apart from conventional methods the recent method to minimise the contaminated level from wastewater was being made with electrocogulation method. He said it was the bounden duty to not only comply with the norms of effluent discharge as per CPCB and Uttar Pradesh State Pollution Control Board but also to safeguard the environment.

Director NSI, Prof Narendra Mohan addressing the workshop on ETP Operation and Laboratory Analysis on Wednesday. Pioneer

He said a charter had been prepared for the control of effluent being generated by the sugar factories situated in the Ganga basin and once it came into force, the sugar factories shall be required to reduce the quantity of their effluent by 20 per cent. He said in addition to this, they shall be required to upgrade their effluent treatment plants for sulphate removal and brine recovery. He said as the sugar factories shall commence their next crushing operations from October 15 it was essential that for proper operation of the Effluent Treatment Plants they set up an 'Environment Cell'.

The training programme was also addressed by Dr Santosh Kumar, Assistant Professor Biochemistry who detailed the principle of analysis for determining various constituents and measures to be taken for controlling them. He also made a presentation on various techniques of treating effluent from sugar factories particularly on removal of sulphate present in some of the streams of waste waters. Dr Vishnu Prabhakar Srivastava, Assistant Professor of Organic Chemistry made a presentation on latest techniques for effluent analysis. He emphasised upon treating the effluent in such a manner so as to use it for irrigation purposes.

NSI informed that the institute will conduct three such programmes during the year for the benefit of technical personnel from sugar factories and distilleries so as to impart them required knowledge on theoretical and practical aspects of effluent handling. In the first phase 52 technical personnel from private sugar factories and distilleries situated in Uttar Pradesh were taking part. In the second session, practical training was imparted to the participants in the institute laboratories on determination of BOD, COD, TSS, pH and Sulphate Content etc. The programme was conducted by Prof JP Srivastava.

20 फीसद इंफ्लुयेंट कम करें चीनी मिल

कानपुर(एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में तकनीकी कर्मियों के लिये आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन ने कहा कि निजी चीनी मिलों व डिस्टिलरियों के तकनीकी कर्मचारियों को विषय से सम्बंधित प्रायोगिक व सैद्धांतिक जानकारी देने के लिये तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि गंगा बेसिन की चीनी मिलों को अपने यहां से निकलने वाले इंफ्लुयेंट की मात्रा में 20 फीसद की कमी करनी होगी।

संस्थान में 'ईटीपी आपरेशन एंड इंफ्लुयेंट एनालिसिस' विषय पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए प्रो.नरेन्द्र मोहन ने कहा कि तकनीकी कर्मियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में पहले चरण में प्रदेश की निजी चीनी मिलों के 52 तकनीकी कर्मी भाग ले रहे हैं। उन्होंने बताया कि चीनी मिलों और डिस्टिलरियों को न केवल केंद्रीय प्रदूषण बोर्ड या उप्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के दिशा निर्देशों का अनुपालन आवश्यक है बल्कि पर्यावरण संरक्षण के लिये भी चीनी मिलों व डिस्टिलरियों को आगे आना होगा। उन्हें यह तय करना होगा कि उनके यहां से निकलने वाले इंफ्लुयेंट की मात्रा और गुणवत्ता नियंत्रित हो। गंगा बेसिन में स्थित चीनी मिलों के लिये एक चार्टर बनाया गया है। इसके लागू होने पर चीनी मिलों को अपने यहां से निकलने वाले इंफ्लुयेंट की मात्रा में 20 फीसद की कमी करनी होगी। चीनी मिलों से निकलने वाले इंफ्लुयेंट में सल्फेट व ब्राइन की मात्रा पर भी नियंत्रण करना होगा।

शुगर इंस्टीट्यूट में तीन दिवसीय कार्यशाला को संबोधित करते निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन। फोटो : एसएनबी

डॉ.संतोष कुमार सहायक आचार्य जैव रसायन ने इंफ्लुयेंट में मौजूद विभिन्न तत्वों की मात्रा व उनका विश्लेषण करने की विधियों की जानकारी दी। यहां डॉ.विष्णु प्रभाकर, जेपी श्रीवास्तव और अशोक कुमार गर्ग आदि थे।

चीनी मिलों पर लागू किया जाएगा चार्टर

कानपुर | कार्यालय संवाददाता

गंगा बेसिन में बनी सभी चीनी मिलों के लिए एक चार्टर तैयार किया गया है, जिसे जल्द ही लागू किया जाएगा। चार्टर लागू होने के बाद सभी चीनी मिलों को 20 फीसदी प्रदूषण और कम करना होगा। इसमें उन्हें सल्फेट व ब्राइन पर नियंत्रण करना होगा। यह बात राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कही। उन्होंने कहा कि पेराई सत्र 2018-19 के लिए चीनी मिलों को 15 अक्तूबर से शुरू करने का प्रस्ताव है। इसके लिए सभी मिलें अभी से इफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट सुव्यवस्थित कर लें।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में बुधवार से तीन दिवसीय ह्वाईटीपी आपरेशन एंड इफ्लुएंट एनालिसिसह्न प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुआ। इसका उद्घाटन संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने किया। प्रथम चरण में प्रदेश के 52 कर्मचारी इसमें हिस्सा ले रहे हैं। उन्होंने बताया कि सभी चीनी मिलों को केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, यूपी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मानकों को पूरा करने के साथ फैक्ट्री में इनवायरमेंट सेल की स्थापना करनी चाहिए।

डॉ. संतोष कुमार ने चीनी मिलों से निकलने वाले इफ्लुएंट में उपस्थित विभिन्न तत्वों की मात्रा और उसके विश्लेषण के बारे में जानकारी दी। डॉ. विष्णु प्रभाकर ने विश्लेषण की नई तकनीकी के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि चीनी मिलों से निकलने वाले ट्रीटेड इफ्लुएंट की गुणवत्ता ऐसी होनी चाहिए कि उसका सीधा प्रयोग खेती मे किया जा सके। प्रशिक्षण ले रहे कर्मियो को संस्थान की अत्याधुनिक लैब का भ्रमण भी कराया गया। जहां उन्होंने इफ्लुएंट की बीओडी, पीएच, सल्फेट व टीएसएस निकालने के बारे में जानकारी ली। संचालन जेपी श्रीवास्तव ने किया।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में लोगों को दी गई जानकारी।